ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-3* April- 2019
Innovation The Research Concept

उपयुक्त शोध समस्या का चयन (शोध पत्र का आधार–भूत स्तम्भ)

विजय लक्ष्मी मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर
एम0एड0 विभाग
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला
पी0 जी0 कॉलेज,
गोरखपुर

सारांश

वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारम्भ करने से पहले अनुसंधानकर्ता के सामने सर्वप्रथम यही समस्या होती है कि किस समस्या का अध्ययन करे । अनुसंधान समस्या का अनुसंधान करने से पहले चयन करना होता है। अनुसंधान समस्या का चयन करने के लिये अनुसंधानकर्ता को जब समस्या से सम्बन्धित सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान होता है तो उसके लिये अनुसंधान समस्या का चयन सरल हो जाता है । साथ ही ऐसी समस्या का चयन करना चाहिये तो समाधान योग्य हो। समस्या रचना के साथ साथ परिकल्पना का स्वरुप निश्चित होने लगता है ,इसके द्वारा ही अनुसंधानकर्ता कार्यवाहक परिभाषाओं तथा अध्ययन के प्रत्ययों इत्यादि के स्वरुप का निर्धारण करता है। शोध समस्या के मूल्यांकन के लिये कुछ प्रश्नों को हल किया जाता है यदि शोधकर्ता उन प्रश्नों का उत्तर हॉ में पाता है तो वह निश्चित रुप से निष्कर्ष पर पहुचता है कि शोध समस्या उपयुक्त तथा वैज्ञानिक है। समस्या के मुख्य स्रोतों में –शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में कितना अनुसंधान कार्य हो चुका है।पूर्ण अनुसन्धान कार्य का विशेष अध्ययन।नवीन प्रवृतियों का विश्लेषण।ज्ञान के किसी एक क्षेत्र का विशेष अध्ययन। वर्तमान क्रियाओं ओर आवश्यकताओं पर विचार।अनुसंधान की पुनरावृत्ति अथवा प्रसार। अध्ययनान्तर्गत विभिन्न क्षेत्र आदि।

शोध पत्र की समस्या लघु, स्पष्ट तथा मूर्त होनी चाहिये अर्थात समस्या का स्वरुप छोटा,भ्रम रहित एवं समाधान योग्य होना चाहिये। एक अध्ययन के लिये एक ही शोध समस्या का चयन किया जाना चाहिये। कई समस्याओं को एक ही शोधपत्र में लेने से उपयुक्त समाधान की सम्भावना कम हो जाती है।समस्या का क्षेत्र,विस्तार , आकार सीमित होने से उचित शोध परिकल्पना के निर्माण में सहायता होती है क्योंकि इसका समाधान परिकल्पना पर निर्भर करता है। मैक्गुइन ने अपनी पुस्तक experimental psychology में कहा है कि'' जिसका उत्तर व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के प्रयोग से दिया जा सकता है।''शोध समस्या तात्कालिक वातावरण से सम्बन्धित होनी चाहिये अर्थात उसका सम्बन्ध वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य से हो। अनुसंधानकर्ता कार्यवाहक परिभाषाओं तथा अध्ययन के प्रत्ययों इत्यादि के स्वरुप का निर्धारण करता है। शोध समस्या के मूल्योकन के लिये कुछ प्रश्नों को हल किया जाता है यदि शोधकर्ता उन प्रश्नों का उत्तर हॉ में पाता है तो वह निश्चित रुप से निष्कर्ष पर पहुचता है कि शोध समस्या उपयुक्त तथा वैज्ञानिक है

मुख्य शब्द – शोध–समस्या, चयन ।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के मूल प्रवृत्तिजन्य पाशविक व्यवहारों का परिमार्जन कर उसको मानवता प्रदान करती है। इसके साथ ही साथ शिक्षा राष्ट्र भोतिका उन्नति में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्तियों में कार्यकुशलता

बढ़ाकर उत्पादन क्षमता को विकसित करती है।शिक्षा एवं ज्ञान को उपयोगी बनाने के लिये आवश्यक है कि इसमें शोध कार्य निरन्तर होतें रहें।

शोध पत्र द्वारा ज्ञान के किसी सूक्ष्म अंग का विस्तृत,सम्पूर्ण और नवीन चित्र प्रस्तुत करता है। इसके द्वारा ज्ञान कोष में वृद्धि एवं विकास होता है। गुड,बार एवं स्केट्स के अनुसार '' विज्ञान का कार्य बुद्धि का विकास करना है और शोध का कार्य ज्ञान का विकास करना है अतः ज्ञान के विकास के लिये शोधकार्य अनिवार्य है।''

सामान्यतः शोध समस्या एक ऐसी समस्या होती हैं जिसके द्वारा दो या दो से अधिक चरों के बीच एक प्रश्नात्मक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति होती है। शोध समस्या के कथन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उसमें कुछ पूछा जा रहा है जिसका उत्तर शोध कार्य पूर्ण हो जाने मे ही दिया जा सकता है। समस्या की उत्पत्ति उस परिस्थिति में होती है जिसमें कार्यकर्ताजागरुक होता है तथा उसे इस बात की अनुभूति होती है कि सुचारु रुप से काय्र संचालन में बाधायें हैं ,इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है तथा उनको दूर करने से सैद्धान्तिक अथवा व्यवहारिक, किसी भी समरुप का समाधान होता है।

किसी भी शोध कार्य को प्रारम्भ करने का प्रारम्भ शोध समस्या के चयन से आरम्भ होता है एवं शोधकर्त्ता के समुचित समाधान प्राप्त से पर वह अनुसंधान कार्य समाप्त हो जाता है। इस प्रकार एक प्रासंगिक शोधकार्य हेतु किसी उचित शोध समस्या का चयन करना एक वांछित शोध पत्र लिखने का आधार भूत स्तम्भ होता है। समस्या की रचना करते समय अनुसंधान कर्त्ता को यह ध्यान रखना चाहिये कि अध्ययन की समस्या इस प्रकार निर्मित जिससे वैज्ञानिक विधि द्वारा जानकारी प्राप्त किया जा सके।

शोध पत्र में अनुसंधान समस्या कथन या प्रश्न दोनो ही रूपों में हो सकता है, परन्तु प्रत्येक स्वरूप में यह प्रत्यक्ष अथवा प्रकारान्तर से दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध को निरूपित करती है। शोध समस्या एक ऐसी समस्या होती है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है,यह देखता है। वास्तव में जब किसी प्रश्न का कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता है तो समस्या उपस्थित हो जाती है। शोध पत्र में समस्या का प्रारूप प्रायः एक या एक से अधिक कार्य–कारण सम्बन्ध समाहित रहते है। फ्रेड एन0 करलिंगर के अनुसार'' समस्या एक प्रश्नवाचक वाक्य या कथन होता है जो पूछता है दो या दो से अधिक चरों के बीच क्या सम्बन्ध विद्यमान है, ''अर्थात आवश्यकता की पूर्ति में कमी ही समस्या की उत्तम स्थली है। जिसके समाधान से सार्वजनीन प्रकृति तथा उपयोग की सूचना प्राप्त होती है।

शोध समस्या विभिन्न प्रकार की होती है जैसे **प्रायोगिक समस्या, ऐतिहासिक समस्या, सैद्धान्तिक समस्या, व्यवहारिक समस्या, सहसम्बन्धात्मक समस्या एवं सर्वेक्षण समस्यायें आदि।** प्रायोगिक समसयायें वे होतीं हैं जिनका अध्ययन प्रयोगात्मक विधि द्वारा किया जाता है यह प्रायः क्षेत्र अध्ययन के अन्तगर्त किया जाता है। ऐतिहासिक समस्यायें वे होती हैं जो एक विषय के इतिहास या ऐतिहासिक विकास से सम्बन्धित होती है।

सैद्धान्तिक समस्यायें वे हैं जिनका सम्बन्ध एक विषय के नियमों और सिद्धान्तों से होता है। व्यवहारिक समस्याओं से तात्पर्य उन समस्याओं से है जिनका प्रयोग व्यवहार में किया जाता है। सहसम्बन्धात्मक समस्यायें वे हैं जिनमें दो या दो से अधिक चरों के पारस्परिक सहसम्बन्ध का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र और समाज मनोविज्ञान में सर्वेक्षण समस्याओं का अध्ययन किया जाता है । इस प्रकार की समस्याओं के अध्ययन के आधार पर सामाजिक अनुसंधानकर्ता समसया की सतही जानकारी प्राप्त करता है या इस अध्ययन के आधार पर सुधार कार्यक्रम बनता है।

एक शोध समस्या का स्थापन कैसे किया जाय इसके लिये अनिवार्य है कि सर्वप्रथम अध्ययनकर्त्ता को अपनी शैक्षिक बौद्धिक तथा अभिरूचि की पृष्ठभूमि के आधार अध्ययन के लिये क्षेत्र का चयन किया जाना चाहिये क्षेत्र के चयन के उपरान्त सम्बन्धित साहित्य का अध्यययन महत्वपूर्ण है। सम्बन्धित साहित्य के

द्वारा ही समस्या से सम्बन्धित विस्तृत तथ्यों को जाना जा सकता है। उत्तम शोध समस्या की स्थापना में अनुसंधानकर्त्ता द्वारा प्राध्यापकों, प्रबद्ध जनों के द्वारा सम्पर्क की आवश्यकता होती है। समस्या की रचना से पहले अनुसंधान कर्ता अपने क्षेत्र के साहित्य का अध्ययन, क्षेत्र अथवा विषय सामगी में अपने द्वारा किये हुये निरीक्षण तथा अपने क्षेत्र के विद्वानों से समस्या पर की गयी चर्चाओं आदि की सहायता ले सकता है।

वर्तमान कार्य पद्वति का वैज्ञानिक निरीक्षण भी अनुसंधानकर्त्ता में समस्याओं के प्रति सूझ उत्पन्न करेगा और आगें रूचि विकमित करेगा। एक उत्तम शोध समस्या के निमार्ण में शोधार्थी, अनुसंधान, गोष्ठी से विवार आदि को लाभ ले सकता है। पूर्व किये गये शोधकार्य का यदि गहनता से अध्ययन किया जाय तो अनेक ऐसी तथ्य है। जो आज भी उपेक्षित है जिन पर शोध कार्य हुआ ही नहीं है। उनको भी शोधसमस्या हेतु चयन किया जा सकता है । इस प्रकार समाधान योग्य समस्या ऐसा प्रश्नवाचक कथन है जिसमें समस्या के समाधान को प्रस्तावित किया जाता है इस कथन में पूछा जाता है कि दो या दो चरों के मध्य किस प्रकार का सम्बन्ध है। समस्या चयन के कुछ सिद्धान्त होतें हैं जो निम्नलिखित है।

शोध समस्या के चयन में कुछ **सिद्धान्त** महत्वपूर्ण हैं

1. समस्या नवीन हो।
2. समसया अनुसंधान कर्ता की रुचि के अनुरुप हो।
3. समस्या की व्यवहारिक उपयोगिता।
4. समस्या से सम्बन्धित आंकड़ों के प्रापत होने की सम्भावना होनी चाहिये।
5. समस्या की व्यवहारिक मान्यतायें होनी चाहिये साथ ही अनुसंधानकर्ता की अभियोग्यता भी होनी चाहिये।

अर्थात एक शोध समस्या तभी अध्ययन हेतु उपयोगी होगी जब वह – क्या यह समस्या मेरी रुचि की है? क्या यह समस्या सैद्धान्तिक और व्वहारिक रुप से उपयोगी है? क्या मेरे अन्दर इतनी क्षमता है कि मैं यह कार्य कर सकती हूँ? क्या मुझे अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित आंकड़े आसानी से शीघ्रता से प्राप्त हो जायेंगें? क्या इस शोध समस्या पर गाइड करने में समर्थ होगें ?क्या मेरे पास शोध कार्य को करने हेतु पर्याप्त धन एवं समय है ? यदि इन प्रश्नों का उत्तर हां में ही प्राप्त होती है तो शोध समस्या अच्छी और सार्थक मानी जाती है। एकॉफ के अनुसार किसी समस्या के लिये पांच तत्वों की उपस्थिति आवश्यक है–अनुसंधान उपभोक्ता तथा अन्य सहगामी, उद्देश्य, उद्देश्य प्राप्ति के लिये अन्य साधन, उपभोक्ता में अन्य साधन की उपयुक्तता के प्रति सन्देह, समस्या से सम्बधित वातावरण।

विशेषज्ञों के अनुसार शोध समस्याओं दो प्रकार की होती है समाधेय समस्या एवं असमाधेय समस्या। समाधेय समस्या से तात्पर्य उन समस्याओं से होता है जिनका उत्तर दिया जाना व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के आधार पर सम्भव है। इस प्रकार की शोध समस्या विज्ञान,कला एवं मानविकी में होती है । किसी भी शोध समस्या को समाधेय समस्या कहलाने के लिये आवश्यक है कि उस समस्या में उठाये गये प्रश्न को अनुभाविक ढंग से हां नही ंके रुप में उत्तर दे सकें अर्थात एक समाधेय समस्या वह है जिसके लिये एक उचित एवं जांचनीय परिकल्पना को एक अनतरिम समाधान के रुप में विकसित किया जा सके। असमाधेय प्रकार की समस्या में दर्शनशास्त्र, धर्म तथा अभौतिक शास्त्रों में किया जाता है। इस समस्या का सम्बंध अलौकिक घटनाओं या प्रश्नों से होता है जिसका सही उत्तर देना सम्भव नहीं है। मैकग्यून के अनुसार '' असमाधेय समस्या कुछ वैसे प्रश्न होतें हैं जिनका आवश्यक रुप से उत्तर नहीं दिया जा सकता है। प्रायः ऐसे प्रश्नों का सम्बन्ध अलौकिक घटनाओं या प्रश्नों से होता है जो मूल कारणों से सम्बन्धित होतें है।''

एक शोध समस्या का प्रतिपादन निश्चित रुप से किसी भी शोधकर्ता के लिये एक कठिन कार्य है परन्तु –

1. वह शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों द्वारा अनुभव की गयी प्रमुख समस्याओं का अध्ययन कर शोध समस्या का प्रतिपादन कर सकता है।
2. एक सफल शोधकर्त्ता शोध समस्या का प्रतिपादन करने के लिये पाठ्य पुस्तकों, शोध जर्नल्स एवं शोध पत्र का सहयोग ले सकता है।
3. शोध समस्या का प्रतिपादन करने के लिये शोधार्थी विषय विशेषज्ञ,प्रोफेसर एवं अध्यापकों के भी अनुभव का सहयोग ले सकता है।
4. शोध समस्या के चयन हेतु नवाचार एवं नवीन तकनीकियों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

बेस्ट एवं काह्न ने शोध समस्या की उत्पत्ति के साठ स्रोतों का उल्लेख किया है जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं –

कार्यक्रमित निर्देश ,टेलीविजन निर्देश, टीम प्रशिक्षण, घरेलू नीतियां एवं अभ्यास, पाठ्येत्तर कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, स्वतंत्र अध्ययन कार्यक्रम, विशेष शिक्षा, केस अध्ययन, सामाजिक– आर्थिक अध्ययन एवं शैक्षिक उपलब्धि, दवाब एवं उपलब्धि,प्रशासनिक नेतृत्व,आत्म प्रतिभा एवं छात्रों का व्यवसायिक उद्देश्य प्रमुख है।

गुड, बार एवं स्केट्स के अनुसार अनुसंधान की समस्या के निम्न स्रोत हैं–

1. शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में कितना अनुसंधान कार्य हो चुका है।
2. पूर्ण अनुसन्धान कार्य का विशेष अध्ययन।
3. नवीन प्रवृतियों का विश्लेषण।
4. ज्ञान के किसी एक क्षेत्र का विशेष अध्ययन।
5. वर्तमान क्रियाओं ओर आवश्यकताओं पर विचार।
6. अनुसंधान की पुनरावृत्ति अथवा प्रसार।
7. अध्ययनान्तर्गत विभिन्न क्षेत्र।

यदि हम निम्नलिखित बिन्दुओं पर विश्लेषणात्मक विधि से विचार करें तो समस्या का चुनाव सरलता से किया जा सकता है।

शोध समस्या की विशेषता

शोध समस्या की विशेषता निम्नलिखित है–

1. शोध पत्र की समस्या लघु, स्पष्ट तथा मूर्त होनी चाहिये अर्थात समस्या का स्वरुप छोटा,भ्रम रहित एवं समाधान योग्य होना चाहिये।
2. एक अध्ययन के लिये एक ही शोध समस्या का चयन किया जाना चाहिये। कई समस्याओं को एक ही शोधपत्र में लेने से उपयुक्त समाधान की सम्भावना कम हो जाती है।
3. समस्या का क्षेत्र,विस्तार , आकार सीमित होने से उचित शोध परिकल्पना के निर्माण में सहायता होती है क्योंकि इसका समाधान परिकल्पना पर निर्भर करता है। मैक्गुइन ने अपनी पुस्तक experimental psychology में कहा है कि'' जिसका उत्तर व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के प्रयोग से दिया जा सकता है।''
4. शोध समस्या तात्कालिक वातावरण से सम्बन्धित होनी चाहिये अर्थात उसका सम्बन्ध वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य से हो।
5. शोधकर्त्ता अपने शोधपत्र के लेखन में ऐसी समस्याओं का चयन करे जो उसकी रुचि के अनुकूल हो तथा जिस विषय पर अध्ययन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाय।
6. समस्या ऐसी होनी चाहिये जिसका मापन एवं मूल्यांकन सरलता से हो सके।
7. समस्या ऐसी होनी चाहिये कि उसके आंकड़ों के प्राप्त होने की सम्भावना हो,वही क्षेत्र चुनना चाहिये जहां से आंकड़े एकत्र करने में कठिनाई उत्पन्न न हो।
8. समस्या अनुसंधानकर्त्ता की अभियोग्यता के अनुरुप होनी चाहिये।

समस्या के परिभाषीकरण में निम्नलिखित सावधानियां ध्यान में रखनी चाहिये–

1. समस्या कथन में ऐसे शब्दों का चयन किया ताय एक ही अर्थ हो,वह स्पष्ट हों।
2. समस्या कथन कम शब्दों में हो किन्तु उन शब्दों में अधिक से अधिक बात कही गयी हो।
3. समस्या का कथन इस प्रकार से करें कि चर आसानी से प्राप्त हों जाये।
4. समस्या का पुनर्अनुमान किया जा सके।
5. समस्या कथन का कोई अवश्य सैद्धान्तिक आधार होना चाहिये।

शोध समस्या का सीमांकन

शोध समस्या का सीमांकन सार्थक शोध कार्य के लिये अनिवार्य होता है।

1. शोध समस्या में अनेक चर होतें हैं किन्तु उन सभी को अध्ययन में नहीं लिया जा सकता है अतः शोध समस्या में महत्वपूर्ण सीमित चरों को ही लिया जाता है जिनका स्पष्ट रुप से विवेचन किया जा सके।
2. समस्या का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है जबकि सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन सम्भव नहीं होता है इसलिये शोध समस्या का क्षेत्र अत्यन्त सीमित किया जाता है। जैसे विशिक्ष्ट आयु वर्ग छात्र आदि।
3. शोध समस्या के अध्ययन के लिये न्यादर्श का अध्ययन किया जाता है ,न्यादर्श का आकार भी सीमित किया जाता है क्योंकि शोधकर्त्ता के पास साधन तथा समय सीमित है।
4. एक शोध समसया में अनेक शोध विधियों को प्रयुक्त किया जा सकता है परन्तु यह सम्भव नहीं है । शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिये एक समुचित विधि से अध्ययन किया जाता है।
5. व्यवहारिक विज्ञानों में एक चर के मापन के लिये अनेकों परीक्षण उपलब्ध होतें हैं परन्तु चर की परिज्ञाषा के अनुरुप ही परीक्षण का चयन करना चाहिये । मापन विशिष्ट परीक्षण तक ही सीमित रहता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार से अध्ययन से स्पष्ट है वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारम्भ करने से पहले अनुसंधानकर्ता के सामने सर्वप्रथम यही समस्या होती है कि किस समस्या का अध्ययन करे । अनुसंधान समस्या का अनुसंधान करने से पहले चयन करना होता है। अनुसंधान समस्या का चयन करने के लिये अनुसंधानकर्ता को जब समस्या से सम्बन्धित सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान होता है तो उसके लिये अनुसंधान समस्या का चयन सरल हो जाता है । साथ ही ऐसी समस्या का चयन करना चाहिये तो समाधान योग्य हो।

शोध समस्या की अभिव्यक्ति मनोवैज्ञानिक शोध में एक ऐसा प्रश्नात्मक कथन के रुप में होता है जिसके चरों को आधुनिक विधियों से मापा जाता सकता है। शोध समस्या के कथन की विशेषताओं के परिणाम स्वरुप ही शोधकार्य विश्वसनीय माना जाता है। शोध समस्या के अनेक स्रोत हैं जिनके द्वारा उपयुक्त शोध समस्या का चयन किया जाता है। समस्या रचना के साथ साथ परिकल्पना का स्वरुप निश्चित होने लगता है ,इसके द्वारा ही अनुसंधानकर्ता कार्यवाहक परिभाषाओं तथा अध्ययन के प्रत्ययों इत्यादि के स्वरुप का निर्धारण करता है। शोध समस्या के मूल्यांकन के लिये कुछ प्रश्नों को हल किया जाता है यदि शोधकर्ता उन प्रश्नों का उत्तर हॉ में प्राप्त करता है तो वह निश्चित रुप से निष्कर्ष पर पहुचता है कि शोध समस्या उपयुक्त तथा वैज्ञानिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश (2015), रिसर्च मैथडॉलाजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर। पृष्ठ 64–74*
2. *गुप्ता,प्रो0 एस0पी0, सम्प्रत्यय,कार्य विधि एवं प्रविधि , शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
3. *पाण्डेय,प्रो0 के0पी0, शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालयप्रकाशन वाराणसी। पृ0 95–108।*
4. *शर्मा,आर0 ए0, शिक्षा अनुसंधान,आर0 लाल0 बुक डिपो,मेरठ (पृ0 95–108)*
5. *कौल, लोकेश, शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस (पृ0 65–90)*
6. *सिंह, अरुण कुमार 2004, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शोध में सांख्यिकीय, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली (पृ027–35)*
7. *डी0 एन0 श्रीवास्तव 2000, अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन आगरा। पृ0 83–94*